339
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1386
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 339

"Chandra Shekhar Azad" in Hindi
Govt of the U.P. Ruo. 255 d/ 14. 2. 40

चन्द्रशेखर आज़ाद

RECORD ... Department

350

किस तरह से उम्र खोते हैं वतन के वास्ते।
किस तरह से जान देते हैं वतन के वास्ते॥

फ़िक्र दुनिया में तुम्हें ले गए बताने आये हम।
खुश रहो अहले वतन अब जाते हैं वन्देमातरम् ॥—आज़ाद

प्र०—बम्बई पुस्तकालय, चौक कानपुर।

चन्द्रशेखर आज़ाद

लेखकः—

हर्षदत्त पाण्डेय (श्याम)

एच० एस० एम० एस० बी० कानपुर

प्रकाशक :—

बम्बई पुस्तकालय,

जगदीश ग्रन्थमाला कार्यालय

चौक, कानपुर ।

तृतीयबार ५०००] [मूल्य ।)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 339
Date 7.12.71
GOVT. OF INDIA

कानून पढ़ो।

अब इस ज़माने में आपको कानून का अज्ञान न रहना चाहिये इसीलिये सब कानून टीका और हजारों नजीरों के साथ हिन्दी में छापे गये हैं। एक आना का टिकट भेज कर सूचीपत्र मँगालो।

पता :—

कानून प्रेस, कानपुर।

१.

चन्द्रशेखर आज़ाद

❀ शीर्ष ❀

अमल, विमल, निर्मल, परम पावन, शुद्ध, पवित्र ।
सुनहु बन्धु एकाग्र हो, श्री आज़ाद चरित्र ॥

(१)

देवी प्रकृति प्रथमहिं मनावहुँ जोर कर विनती करूं ।
फिर देव, देवी, पूज्य गुरुजन के चरण निज शिर धरूं ॥
तीजे महात्मा भारती श्री गांधी जी के सदृश ।
मोती, जवाहरलाल से नेतान के शुभ पद परस ॥

(२)

श्रीमान्यवर श्री मालवी भगवान गंगाधर तिलक ।
निज मात के शिर के मुकुट औ शुभ्र मस्तक के तिलक ॥
अब्बास तैयब जी व अन्सारी या गांधी खान की ।
श्री बोस यस, सी, पन्त जी से वीरवर गुण खान की ॥

(३)

आज़ाद ऐसे वीरवर बिस्मिल से मां के लाल को ।
रोशन से बाँके वीर को परतन्त्रता के काल को ॥
श्री भगत सिंह श्रीदत्त को उन्मत्त और प्रमत्त को ।
बांके जवान दिलेर को औ शेर दिल मद मत्त को ॥

(४)

ओहो मैं रस्ता छोड़ अपना किस दिशा को आ गया ।
निज ध्येय को छोड़ा व दुसरी बात में उलझा गया ॥
बस हो चुका व्यवहार इतना छत्र लोका भास का ।
होगा तभी सन्तोष पाठक सुनकर चरित्राजाद का ॥

(५)

ऐसे ही ऐसे नाम जो सब के गिनाता जाऊंगा ।
निश्चय ही अपनी राह से गुमराह मैं हो जाऊंगा ॥
नामों कि ही सूची का पोथा जायगा श्रीमान बन ।
आजाद का किस्सा धरा रह जायगा प्रिय दोस्त मन ॥

❀ दोहा ❀

इसी लिए संक्षेप में, सब को करूँ प्रणाम ।
लिखूं कथा आज़ाद की, सुनहु बन्धु गुण धाम ॥

(६)

प्रख्यात भारतवर्ष में एक मित्र काशी धाम है ।
शोभा अमित बरणी न जाये पुण्य तीर्थ ललाम है ॥
है केन्द्र शिक्षा संस्कृत का पाठशाला हैं निरी ।
हैं धार्मिक विषयों में इससे दूसरी बस्ती गिरी ॥

(७)

थे यहीं पाते सदा शिक्षा कहीं आज़ाद थे ।
वे थे किसी दृढ़ गुरु के चेले औ कहीं आबाद थे ॥
उस ही ज़माने में उठा था आन्दोलन ज़ोर का ।
हिंसा अहिंसा का सुजन वह युद्ध अति घनघोर था ॥

(८)

सैकड़ों होती गिरफ्तारी वहां पर रोज थीं ।
घटनायें जो घटती थीं वहाँ, पर वे बहुत दिल सोज़ थीं ॥
उनहीं दिनों आज़ाद भी पकड़े गये थे मित्रवर ।
गो बन्द पिंजड़े में हुआ था दोस्त मन शेरे बबर ॥

(९)

एक न्याय मन्दिर से मिली थी बेत १५ की सज़ा।
था गैर मुल्की न्याय थी न्याय धीशों की रज़ा॥
अतएव श्री आज़ाद को भी तख्त पर बाँधा गया।
ऊपर से कपड़ा डाल, कर में बेंत भी साधा गया॥

(१०)

पड़ते हि बेंत सड़ाक से आवाज़ निकली ज़ोर की।
इत महात्मा गांधी की जै आवाज उट्ठी शोर की॥
क्रम २ से ऐसे ही उठी आवाज़ कितनी ही दफ़ा।
यों मिल रही थी देशभक्तों को सज़ाये पुर जफ़ा॥

(११)

उस तौर से आज़ाद ने थे बेत १५ खा लिये।
जिनसे कि थर २ कांपते हैं चोर डाकू जालिये॥
खा बेंत बोला शेर जो तुमने किया अच्छा किया।
पर अब न पकड़े पावोगे तुमको जता हमने दिया॥

(१२)

जड़ काटना परतन्त्रता की अब हमारा काम हो।
मशहूर सब दुनियाँ में अब आज़ाद मेरा नाम हो॥
करके प्रतिज्ञा इस तरह आज़ाद आया जेल से।
ज्यों वीर वर शेरे बबर निकलैं किसी के खेल से॥

(१३)

तो अन्य छात्रों ने किया स्वागत बड़ा आज़ाद का ।
की ज्ञान वापी में सभा एक देख मौका शाद का ॥
थोड़ी सी कुछ तकरीर श्री आज़ाद की उस स्थल हुई
भीड़ भारी सुन रही थी मुग्ध हो निश्चल हुई ॥

(१४)

था असहयोगी ज़माना २१ सन की बात है ।
आज़ाद १३ वर्ष के थे फिर भी जौहर मात है ॥
जुट कर बहादुर कांग्रेस का कार्य फिर करने लगा ।
आज़ाद आज़ादी का यों समझो कि दम भरने लगा ॥

(१५)

फिर एक दिन यह भी हुआ की आन्दोलन बन्द था ।
और देश हित कुछ काम करने का भी रस्ता बन्द था ॥
लाचार विद्या पीठ में फिर से लिखाया नाम को ।
रटने लगे फिर पोथियों को छोड़ सारे काम को ॥

(१६)

प्रणवेश, मन्मथ गुप्त नामक और दो विद्यार्थी ।
शक्षा वहीं पर पा रहे थे और भी शिक्षार्थी ॥
उनकी सलाहों से मिटा था मार्ग तब उस भ्रान्ति का ।
था चन्द्रशेखर बन गया सच्चा पुजारी क्रान्ति का ॥

(१७)

उस काल में कुछ बंग वासी क्रान्ति का करने प्रचार।
वाराणसी में आके ठहरे संगठन का कर विचार ॥
साधन मिला आज़ाद को जा करके उनसे मिल गये।
प्रजा तान्त्रिक संघ के मेंबर बने हिल मिल गये ॥

(१८)

करने लगे सब काम उसका जो कि आया सामने।
डेरा उठाया शेर के बाज़ू से सुख आराम ने ॥
कुछ रोज ही में कर दिखाये काम कितने ही कड़े।
सहते रहे सब कष्ट दुख जो आके उन पर थे पड़े ॥

(१९)

इमानदारी से सदा करते थे अपने काम को।
मक़सूद जो होता था पहुँचाते उसे अन्जाम को ॥
एक बार का है ज़िक्र की हालत बहुत लाचार थी।
औ संघ को इस वक्त रुपये की बहुत दरकार थी ॥

(२०)

थे रास्ते सब बन्द ना मिलने की कोई आश थी।
था रोज का खर्चा समझिये पर न कौड़ी पास थी ॥
इस ही तरद्दद में थे सब किस तौर से अब काम हो।
जब पास भूजी भाँग नाहीं सर बला का दाम हो ॥

(२१)

गोविंद स्वामी ने बताई एक यह तदबीर है ।
लागी है मठ के नाम एक भारी बहुत जागीर है ॥
बीमार है उसका पुजारी शिष्य की तालाश है ।
हो कौन अधिकारी यहां ससपंज उसको खास है ॥

(२२)

मनसा यही मेरी कि कोई शिष्य उसका जाय बन ।
तो सहज ही हाथ लग जाये हमें लाखों का धन ॥
दलपति ने सुन कर बात यह आज्ञा दई आजाद को ।
बांके बबर को शेर नाहर को दिले फौलाद को ॥

(२३)

की तुम करो यह काम साधू बन के उस जां पर रहो ।
दल की भलाई के लिए तुम कष्ट ये इतना सहो ॥
यह बात सुन आज़ाद ने उस वक्त उनसे यों कहा ।
मेरे लिये सब साध्य है तुम वीरवर सुन लो यहा ॥

(२४)

कहते सुना था उनको होगा इससे अपना नाम क्या ।
घण्टा हिलाना काम जिसका वह करेगा काम क्या ॥
पर आज ऐसा वक्त था खुद ही पुजारी बन गये ।
मतलब बनाने के लिये वह धर्मधारी बन गये ॥

(२५)

मठ में लगे रहने सुमरनी फेरना बस काम था।
घण्टा हिलाना आरती करना सुवह औ शाम था॥
हर तौर थे चैनों अमन ना नाम तक था दुःख का।
थे सैकड़ों नौकर सजा था साज सारे सुःख का॥

(२६)

पर त्यागियों के वास्ते सुख भोग है किस काम का।
गोली, तमंचा, बम, के आगे ऐश है किस काम का॥
दो माह तक तो चन्द्रशेखर कार्य कुछ करते रहे।
पर कृत्य कब तक उनसे ऐसे सोचिये जाते सहे॥

(२७)

चोरी से दलपति के यहाँ पर पत्र भेजा सोच कर।
उसमें लिखा था अब न होगा मित्रवर मेरा गुजर॥
क्यों कि मरेगा यह नहीं यह हर तरह मजबूत है।
ताकत है इसकी देह में काफी से जायद बूत है॥

(२८)

इस वास्ते बेकार है अपना समय करना जयाँ।
मिलती नहीं कौड़ी भी इससे हर तरह से है अयाँ॥
बतलाइये पूरा करूं मैं आपके आदेश को।
बतलाइये रक्खूं या फेंकूं जोगड़ा के वेष को॥

(२९)

मेरे सवालों का महोदय जल्द उत्तर दीजिये ।
वरना यहां से भाग आऊंगा समझ यह लीजिये ॥
यह पत्र पा दलपति ने भेजा था वहाँ गोविन्द को ।
औ साथ में भेजा था मनमथ गुप्त दानिशमन्द को ॥

(३०)

वे जाके पोशीदा तरीके से मिले आज़ाद से ।
दिल जले से मन मरे से और जिगर नाशाद से ॥
समझाया उनको हर तरह की और थोड़े दिन रहो ।
जब आपदा इतनी सही तो और थोड़े दिन सहो ॥

(३१)

पर एक भी उनने न मानी साथ इनके हो लिये ।
पिंजड़े से पक्षी ज्यों निकल कर जाता चमन के हो लिये ॥
पर बिना पैसे बताओ किस तरह से काम हो ।
ये ही तरद्दुद हर समय रहता सुबह क्या शाम हो ॥

(३२)

लाचार हो कर दूसरे ही मार्ग पर बढ़ना पड़ा ।
थे डालने डाके बड़े बद मार्ग पर अड़ना पड़ा ।
उनका ही थोड़ा जिक्र मैं अब आपको बतलाऊंगा ।
किस तौर की घटना घटी थी आपको समझाऊंगा ॥

(३३)

भाड़ोदिया स्टोर है मशहूर देहली के शहर।
पहले वहीं की थी डकैती ज़िक्र सुन लो मित्र वर ॥
आज़ाद धनवन्तर व काशीराम का यह काम था।
हर मामले को होशियारी से दिया अन्जाम था ॥

(३४)

तारीख टाइम नियत पर तीनों ही पहुँचे नौ जवां।
थे और भी साथी सिपाही नौजवानों के वहां ।
जाते ही जाते सेठ की छाती तमंचा रख दिया।
दो तालियां अपनी हमें आज़ाद ने यों कह दिया ॥

(३५)

घबड़ा के उस बनिये ने चट अविवाद दे दी तालियां।
आज़ाद ने चट सेफ खोली औ निकाली गड्डियां ॥
थे नोट कई हजार के चट डाल पाकेट में लिये।
फिर सेठ से बोले तमंचा सामने उसके किये ॥

(३६)

अब देखिये जाते हैं हम जै राम जी की सेठ जी।
पर याद रखना आप मत हल्ला मचाना सेठ जी।
वरना बुरा होगा बहुत गोली जिगर के पार हो।
निश्चय ही किस्ती आपकी भव धार के उस पार हो ॥

(३७)

कह सेठ से ऐसे मुड़े वो साथियों की ओर फिर।
कुछ इशारा कर दिया हमराह लोगों को उधर ॥
क्रम क्रम से बाहर आ गये थे चट्ट पट लम्बे पड़े।
स्टोर के अन्दर रहे एक चन्द्रशेषर ही खड़े ॥

(३८)

वो सेठ से कहने लगे, मम चन्द्रशेखर नाम है।
आज़ाद का है तखल्लुस, आतकवादी काम है ॥
पैसा जो हम ले जा रहे हैं आपका यह लूट कर।
वह देश के हित में लगेगा याद रखिये मान्यवर।

(३९)

जो भेद था अपना सभी समझा दिया है आपको।
थी ज़रूरत इस लिये यह दुख दिया है आपको ॥
अब लीजिये जाता हूँ मैं भी जोर से चिल्लाइये।
चाहे पुलिस बुलवाइये चाहे रिपोर्ट लिखाइये ॥

(४०)

गाडोदिया स्टोर की तो आपने सुन ली कथा।
अब कानपुर के एक डांके की सुनाऊंगा कथा ॥
एक कच्छ के तज्जार की मशहूर नामी दुकान है।
कुछ भला सा नाम पड़ता फर्म का श्रीमान है ॥

(४१)

कुछ साथियों के साथ श्री आज़ाद जा धमके वहां।
दूकान पर कोई न था केवल मुनीम रहा जहां ।।
उनसे ही ताली उनने मांगी तिजूरी की जिस घड़ी।
इनकार उसने कर दिया उसकी सजा उसको मिली ॥

(४२)

आज़ाद ने उसके तमाचा एक मारा तान कर ।
आंख फूटी एक उसकी औ गिरा भय मान कर ॥
ताली निकाली जेब से औ सेफ डाला खोल है।
ले नोट दस हज़ार के चट वहां से गये डोल हैं ॥

(४३)

इस तरह से डाके गिनाऊं मैं कहाँ तक मित्रवर।
तो हो नहीं सकता है मुमकिन हर तरह हमसे प्रवर ॥
इस वास्ते मैं इस विषय को छोड़ देता हूं यहीं।
छोटी सी पुस्तक में लिखी जाती हैं सब बातें नहीं ॥

❀ दोहा ❀

आगे बतलाऊं सुजन, अब थोड़े षडयन्त्र ।
किये जो करने के लिये, भारतवर्ष स्वतन्त्र ॥

(४४)

पहले मैं लूंगा सैन्डर्स एस० पी० के हत्या काण्ड को।
लाहौर के इस केस को पंजाब वाले फौंड को ॥
सैन्डर्स ने जब लाजपत पर लाठी चलाई थी कभी।
जिसकी चोटों से उन्होंने मृत्यु पाई थी कभी ॥

(४५)

बदला हमें लेना है उनका दिल में ऐसी ठान ली।
जैसे को तैसी ही सजा देना है ऐसी आन ली॥
भगतसिंह और राजगुरु को साथ में लेकर तुरत।
सैंढर्स के बंगले में जा पहुँचे ये तीनों कालवत॥

(४५)

साहब तो बंगले के किसी कोने में सोता था पड़ा।
लेकिन था चिम्मनलाल बाडीगार्ड सन्मुख ही खड़ा॥
आजाद ने उससे कहा साहब से मिलना है हमें।
उनको बुला लाओ ज़रा तकलीफ तो होगी तुम्हें॥

(४६)

आजाद की सुन बात बाडीगार्ड बोला इस कदर।
श्रीमान जी जब आपका परिचय कोई पूछे अगर॥
उत्तर में श्री आजाद ने कुछ नाम था बतला दिया।
मिलने को एस०पी० से है कोई दोस्त यह कहलादिया॥

(४८)

उस नाम को सुनते ही साहब शीघ्र बाहर आगया।
क्या पता उसको कि उसके काल शिर पर छा गया॥
आते ही सन्मुख भगत ने ली रिवाल्वर तान है।
अरु राजगुरु ने भी निकाला शूट का सामान है॥

(४६)

दोनों की गोली संग इक सैंडर्स के जाकर लगी।
तत्क्षण उसी के घाव से तब जान होगई मुल्तवी ॥
पहुँचा उन्हें मुल्के अदम दोनों बहादुर चल दिये ।
चिम्मन भी पीछे हो लिये उनको पकड़ने के लिये ॥

(५०)

आज़ाद ने उनसे कहा पीछे न तुम मेरे डटो।
अपना भला गर चाहते हो तो चलो पीछे हटो ॥
होनी के बल होकर के उसने मानी नहीं कछु बात है।
आज़ाद की पिस्तौल का होने लगा आघात है।

(५१)

गोली जो निकली धाँय से हड्डी पसलियाँ तोड़ कर।
दुनियां से चिम्मन चलदिये अपना सभी कुछ छोड़ कर ॥
चटपट ही अब तेजी से ये तीनों दिलावर चल दिये।
स्कूल के होस्टल में जाकर घुसे हिम्मत किये ॥

(५२)

तब गई मौके पै आ पुलिस जाँच भी होने लगी।
लिया घेर छात्रावास भी और तलाशी करने लगी ॥
इस ओर तीनों का अनोखा स्वांग है देखो नया।
श्री सिंह को साहब बना आज़ाद चौबे बन गया ॥

(५३)

श्री गुरु को बैरा की सभी पोशाक पहनाई गई।
इक हाथ में छोटी सी पेटी दी गई सुन्दर नई॥
ऐसे बना कर स्वांग ये तीनों के तीनों भग गये।
ढूंढ़ा पुलिस ने बहुत पर वे साफ उसको ठग गये॥

(५४)

अब जिक्र करता हूँ मैं वायेसराय के बम केस का।
एच, राज औ योगेश जी के जोगड़ों के बेष का॥
इस ही विषय की एक बैठक कानपुर में की गई।
बम केस की उसही जगह पर बात तय कर ली गई॥

(५५)

योगेश औ एच राज को वह काम था सौंपा गया।
जङ्गल में एक स्थान भी इस वास्ते सोचा गया॥
लायन से दो फलांग पर मतलब का यह अस्थान था।
कूआ बना था एक और जङ्गल महा सुनसान था॥

(५६)

दोनों पटरियों पर वहां फिट बम इन्होंने कर दिये।
औ तार उस कूंयें तलक दोनों ने मिल कर धर दिये॥
खुद बन गये साधू जती और करने निगरानी लगे।
ता काम में गल्ती न हो हर तौर आसानी लगे॥

(५७)

टाइम पर अपने ट्रेन आई औ निकलने को किया।
बम का उन्होंने मित्र चट पट स्वीच चालू कर दिया॥
पर दैव गति होती प्रबल होनी से बस चलता नहीं।
जिन्दगी उस लार्ड की थी मौत आ सकती कहीं॥

(५८)

स्टाफ सारा उड़ गया था ना बचा कोई बशर।
दो बोगीयां पूरी हुई थीं चूर बम को खाय कर॥
सब आक्रमणकारी भगे थे आगये निज धाम पर।
अफ़सोस पर सब को हुआ इस आज के नाकाम पर॥

(५९)

इस वक्त भी कोई गिरफ्तारी नहीं की जा सकी।
पुलिस हो हैरान बैठी कुछ पता न लगा सकी॥
ऐसे ही झगड़े थे अनेकों रोज उस आज़ाद के।
दिल में भरा वीरत्व था उस शेर हिम्मत शाद के॥

(६०)

अब दूसरे षड़यन्त्र का किस्सा सुनाता हूँ तुम्हें।
बम ऐसेम्बली केस का किस्सा बताता हूँ तुम्हें॥
उस रोज सैफटी बिल वहां पर पास होने को था जब।
श्री भगतसिंह औ दत्त ने बम फेंका वहाँ जा करके तब॥

(६१)

आज़ाद ने भेजा था दोनों का इतना ही काम का।
औ आप दर्वाजे पै बैठा चौकसी के काम को॥
बम फेंक दीना मध्य में श्री भगतसिंह सरदार ने।
मच गई भगदड़ लगे अँयं क्या हुआ उचारने॥

(६२)

सरदार भगतसिंह ने खींच दी थोड़ी वहीं।
बांटे थे नोटिस और अपने दिल की कुछ बातें कहीं॥
दस मिनट में आई पुलिस चट हाथ उनका धर लिया।
झट हाथ डाली हथकड़ी बन्दी उन्होंने कर लिया॥

(६३)

दोनों बबर शेरों को ले दस्ता पुलिस का जब चला।
इन्कलाब जिन्दाबाद से लगता था वह रस्ता भला॥
बन्दी हुआ दोनों को जब श्री चन्द्रशेषर ने सुना।
प्रण निभाने चल दिये मन में न कुछ सोचा गुना॥

(६४)

इस तरह कौतुक अनेकों श्री चन्द्रशेषर ने किये।
गिन गिन के उस नाहर ने थे सरकार से बदले लिये॥
पर एक सा ही दिन सदा रहता किसी का भी नहीं।
होता कहीं दिन का उजेला रात अंधियाली कहीं।

(६५)

इस क्रम के ही चक्कर में पड़ आज़ाद अब ना चार है।
साथी गये कितने बिछुड़ इससे हुआ लाचार है॥
बिस्मिल व रोशन लाहिरी अश्फ़ाक को फांसी हुई।
राजगुरु सुखदेव अरु सरदार को गांसी हुई॥

(६६)

ऐसे ही उसके सैकड़ों साथी गये उससे बिछुड़।
वीरान गोया हो गई थी वाटिका सुन्दर सुघड़॥
था काम करने वाला कोई सामने उसके नहीं।
दिखता नहीं था रास्ता उसको अंधेरे में कहीं॥

(६७)

इस वास्ते ही काम उसने बन्द दल का कर दिया।
औ ओट दुनियाँ की नज़र से उसने अपने को किया॥
सब काम हो गये बन्द अब दल का न नाम निशान था।
ना था किसी का कुछ पता ना नाम और निशान था॥

❀ दोहा ❀

पहला हिस्सा यहां पर हुआ मित्र सम्पूर्ण।
करूं दूसरे भाग में भूली बातें पूर्ण॥

(६८)

आज़ाद के व्यक्तित्व पर अब मैं चलाता हूँ कलम।
उसकी प्रकृति के विषय में कर मैं रहा कुछ और श्रम॥
कूव्वत थी उसकी देह में ताक़त थी औ था क्रोध भी।
हो जाया करता था वो आपे से भी कुछ बाहर कभी॥

(६९)

इस बात ही की पुष्टि की घटना सुनाता हूँ अभी ।
यह तो नहीं मैं कह रहा की सत्य है अक्षर सभी ॥
हमने सुनी गुरुओं के मुख से इसलिये ही खास है ।
पूरी तरह हमको हुआ इस बात पर विश्वास है ॥

(७०)

साथी ने पूंछा एक दिन आजाद से आऊं कहां ।
बोले कि इतने बज के इतने मिनट पर मिलना वहां ॥
होतव्यता २--४ मिनटों का फरक था पड़ गया ।
रस्ते में उसकी सायकिल से कोई कहीं पर लड़ गया ॥

(७१)

कहना था फिर आजाद का क्या लाल पीले पड़ गये ।
दो चार अपने दस्त फौलादी थे उसके जड़ गये ॥
काफी चुटीला मार खा कर वह बिचारा हो गया ।
पर दूसरे लोगों को ये काफी इशारा हो गया ॥

(७२)

इतने कड़े होने पे भी वे दिल के अपने साफ थे ।
थे खुश दुरू था हाथ खर्चीला बशर असराफ थे ॥
थे आप करते काम औरों से भी लेना जानते ।
खिदमत वतन के ही धरम अपना करम थे मानते ॥

(७३)

ऐसी प्रकृति थी आपकी कितनों के दिल अपना लिये ।
कितने ही मेंबर आपने पार्टी में और बढ़ा लिये ॥
गोविंद स्वामी और श्री योगेश इसमें खास हैं ।
ये हाथ दहने चन्द्रशेषर के थे ये विश्वास हैं ॥

(७४)

थे चतुर इतने आप अच्छे २ खाते मात थे ।
नित नया एक आदर्श रखते चतुरता का साथ थे ॥
इस जिक्र से उसका पता कुछ आपको लग जायगा ।
अन्दाज उनकी होशियारी का यहाँ हो जायगा ॥

(७५)

२४ सन की बात है एक परचा बटा था हर जगह ।
था बांटने में हाथ इनका दोस्त उसमें हर तरह ॥
उस रोज ही की बात एक अधिकार धारी के यहाँ ।
हर रजिस्टर में मिला परचा धरा उसको वहां ॥

(७६)

अब देखिये किस जगह तक चालाकी खेली जायकर ।
और बिना मरजी के वहां परचे दिये पहुँचायकर ॥
दी जा सकें इस जगह पर काफी नजीरें और हैं ।
पर पाँव फैलाऊंगा उतने ही कि जितनी सौर है ॥

(७७)

था सादगी का एक गुण श्री चन्द्रशेषर में जनाब ।
बेकार बातों में न करता एक पाई था खराब ॥
बिलकुल ही साधारण तरह का आपका पहनाव था
होगा ये ऐसा आदमी यह गैर को जँचता न था ॥

(७८)

मौके पे कुछ भी जाता बन उनके लिये एक खेल था ।
बे मेल भी बाना कभी उनके लिये बा मेल था ॥
बन जाते थे वो कुछ के कुछ अपनी गरज़ के वास्ते ।
सह लिया करते थे वह तकलीफें फरज़ के वास्ते ॥

(७९)

एक बार एक एस. पी. का उनको ड्रायवर बनना पड़ा ।
अपनी गरज के वास्ते नौकर हुये रहना पड़ा ॥
कितने ही दिन की नौकरी इनने छिपा कर भेद को ।
औ चतुरता से भेद डाला एक दुर्ग अभेद को ॥

(८०)

उसही जिले के कलक्टर को यह पता था लग गया ।
और लेके थोड़े सिपाही वह पकड़ने को आ गया ॥
फाटक के ही ऊपर मिले श्री चन्द्रशेषर थे खड़े ।
साहब ने पूछा नाम तो लेकर तमंचा आ अड़े ॥

(८१)

श्री चन्द्रशेखर ने उसी क्षण ताड़ ली क्या बात है।
देने लगा झट कार्ड विजटिंग सोचली निज घात है॥
कार्ड उनके हाथ से चटपट कलेक्टर ने लिया।
उन छोटे छोटे टाइपों को ज्योंही पढ़ने को किया॥

(८२)

कुछ ध्यान उसका पलटते ही एक दम आज़ाद ने।
हाथ पर मारा था घूंसा उस जिस्म के फौलाद ने॥
उसके लगते ही तमंचा दूर जा कर के गिरा।
घबड़ा गया अंग्रेज़ बच्चा सकपका कर के गिरा॥

(८३)

चटपट उठा पिस्तौल ली आज़ाद ने उसकी लपक।
दी तान उसकी ही तरफ़ गुस्से से बोला हैन्डस अप॥
लाचार होकर हाथ दोनों उसने ऊपर कर दिये।
क़ैदी बनाने आये थे क़ैदी गये खुद ही किये॥

(८४)

आजाद बोला कार में चुपचाप अब चढ़ जाइये।
यह तमंचा लूंगा मैं घर आप अपने जाइये॥
वह वक्त था ऐसा कि बेबश कार पर चढ़ना पड़ा।
पर आज इस ज़िल्लत का उसको रंज था दिल में बड़ा॥

(८५)

एक बार का एक और ऐसा ही ज़िकर सुनिये सुजन ।
टूटो टपरिया के बिना ही थे गये नव्वाब बन ॥
शहजहाँपुर ये गये थे एक कोई काम से ।
साथ में साथी कई थे पार्टी के नाम से ॥

(८६)

दो चार दिन रहने को कोई जगह की तालाश थी ।
एकान्त का स्थान हो यह बात उसमें खास थो ॥
उस जगह खाली पड़ा नव्वाब का माकान था ।
दो चार उनके नौकरों को छोड़ कर कोई न था ॥

(८७)

सोचा गया इसमें ही चल कर के ठहरना चाहिये ।
असलियत अपनी जाय छिप वह स्वाँग रचना चाहिये ॥
सब काम निज पूरा हो मगर हाथ पाँव बचाय कर ।
टिक रहो इसमें नौकरों को बेवकूफ बनाय कर ॥

(८८)

कहने का मतलब ये कि जाकर इसमें टिक सब जन गए ।
नव्वाब के श्री गुप्त जी थे भानजे भी बन गये ॥
कोई बनाये दोस्त औ कुछ लोग थे नौकर बने ।
बन जाय अपने काम वैसे ही रहेना कुछ बने ॥

(८९)

थे काम बढ़कर एक से एक होते थे लाशानी मिसाल।
हर बात में दिखला दिया करता था अपना वह कमाल॥
अय्यारी, चालाकी, वगैरह फनों में हुशियार था।
सच्चा बहादुर वीरवर शेरे बबर सर्दार था॥

* दोहा *

मैं छोड़ूं इस विषय को अब सज्जन गुण धाम।
क्रमिक विकाशिक तात्त्विक वरणूं ललित ललाम॥
तीन भाग में बांट दूं सारा जीवन कार्य।
साधक से साधू बने फेर हुये आचार्य॥

(९०)

अब ज़िक्र करता चन्द्रशेषर के मैं क्रमिक विकाश का।
फल काम करने की रगड़ का रोज़ के अभ्यास का॥
पहले वो थे कुछ और कुछ दिन बाद में कुछ और थे।
औ काम करने के भी सारे दूसरे ही तौर थे॥

(९१)

बचपन का तो किस्सा किसी को भी नहीं मालूम है।
वह कौन थे, क्या थे, कहां के थे, नहीं मालूम है॥
इसकी वजह है एक उनकी प्रकृति कुछ ऐसी ही थी।
अपने विषय में किसी को कुछ भी बताते थे नहीं॥

(६२)

औ इन्हीं कारण की वजह से गिरफ्तार भी न होसके।
जिन्दा न पकड़ा जाऊंगा इस प्रण को आप निभासके॥
इससे न बचपन का कोई मालूम उनका हाल है।
है वर्ष उनकी तेरहवीं इकीस की यह साल है॥

(६३)

इस साल ही पहले पहल आये थे ये कांग्रेस में।
था आन्दोलन चल रहा उस वक्त था इस देश में॥
स्वाधीनता का नाम सुनते थे न पर ये जानते।
आज़ाद हो कर क्या मिलेगा यह नहीं थे जानते।

(६४)

चहते थे आज़ादी फ़क़त कुर्बान होना काम था।
शुभ कामना हित नित्य पूजन पाठ सुबहो शाम था॥
अब दूसरे दिन यह सुबे आतंकवादी हो गये।
बम तमंचे आदि के ये शीघ्र आदी हो गये॥

(६५)

गौरांगों को मारना था शग़ल इनका उन दिनों।
सरकारी खजाना लूटना था काम इनका उन दिनों॥
आज़ाद करना चाहते थे मुल्क को ये क्रान्ति से।
ये शान्ति पथ को छोड़ ऐसा कर रहे थे भ्रान्ति से॥

(६६)

थी प्रजा तान्त्रिक राज्य कायम करने की दिल में लगन।
औ उसी की करते थे कोशिश हमेशा सुभट जन॥
फिर समय ऐसा हुआ जब कोई भी चारा न था।
आज़ाद केवल था अकेला कोई कहीं प्यारा न था॥

(६७)

था विचारों में भी अन्तर आ गया उस बीर के।
आतंक से विश्वास कुछ कुछ घट गया था धीर के॥
इन सभी बातों के कारण तोड़ दल उसने दिया।
जन संगठन का मार्क्सवादी रास्ता अपना लिया॥

(६८)

पर ऐसी हालत में भला कर क्या सकेगा बीरवर।
सरकार का मुजरिम न था औ फरार था शेरे बबर॥
वह कर सका इतना ही कि जाकर कहीं पर छिप गया।
थोड़े दिनों तक चन्द्रशेखर था यहीं पर छिप गया॥

* दोहा *

ग्रीषम ऋतु के ताप से जैसे मिटे वसन्त।
वैसे ही उनके हुआ जीवन का भी अन्त॥
तारीख २३ फरवरी सन् ३१ की साल।
इन्हें इलाहाबाद को खींच ले गया काल॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 339
Date 7:1271
GOVT. OF INDIA

(९९)

बैठा था अलफ्रेड पार्क में एक और साथी साथ था।
आजाद से मिलने का वादा भी किसी के साथ था॥
एक दूसरे पर ध्यान था सबकुछ गये वे भूल थे।
था जिक्र कुछ उनमें छिड़ा बातों में वो मशगूल थे॥

(१००)

इस ही समय एक आके मोटर पास में उनके रुकी।
और नाट बाबर उतर चट पट हाथ में पिस्तौल ली॥
आजाद से बोले कि अपने हाथ चट ऊपर करो।
गरचे हो हथियार कोई सामने मेरे धरो॥

(१०१)

आजाद ने यह बात सुन कर ली रिवाल्वर तान कर।
दोनों दबे घोड़े व छूटी गोलियां से लान कर॥
आजाद के पांवों में गोली लगी हड्डी टूट कर।
कर में लगी थी नाट के गिरगया तमंचा छूट कर॥

(१०२)

था नाट जाकर के छिपा जिस सजर की आड़ में।
आजाद की लगती थी गोली उस तड़ातड़ झाड़ में।
है देखने वालों का कहना सब निशाने थे सही।
पर नाट की तो जिन्दगी रहना थी होना था यही॥

(१०३)

उस समय तक पुलिश भो काफी गई थी आ सही।
वह दनादन गोलियां इस शेर पर वर्षां रही॥
इस चोट से आजाद अब चलने के काबिल थे नहीं।
इतनी भी ताकत थी नहीं किस भाँति जा सकते कहीं॥

(१०४)

इतने में विश्वेश्वर ने अपना वार उन पर कर दिया।
आजाद ने भी लेटे २ उसका बदला दे दिया॥
गोली लगी जबड़े में जा वह पार उसके होगई
औ जिन्दगी भर के लिये बदशक्ल उसको कर गई॥

(१०५)

गोलियाँ जब होगईं सब खत्म तब वह क्या लड़े।
चलनी कराकर देह मृत हो करके पृथ्वी तल पड़े॥
प्रण निभाया उम्र भर आज़ाद वह होकर रहा।
आज़ाद होकर के जिया आजाद ही था वह अहा॥

(१०६)

वह मर चुका था शेर पर अब भी पुलिस को खौफ था।
इस वास्ते ही और भी २-४ फायर था किया॥
ना जब हिला और डुला वो जबकी न उसने साँस ली।
तो नाट बावर ने तुरत हाथों में रस्सी डाल दी॥

(१०७)

बांधा जकड़ कर लाश को ता फिर न जिन्दा जाय हो।
थे खूब तुम बांके बहादुर वाह वाह बहादुरो ॥
दो सौ थे तुम वह एक था और वह भी थी निष्प्राण लाश।
कहते हो हम भी आदमी हैं डरते थे जाते में पास ॥

(१०८)

मिल जुल के श्री आजाद का शव उनने मोटर पर धरा।
मन में बहादुर बन के वह नाट बावर चल दिया ॥
जनता ने मांगी लाश तो बदले में थी नाहीं मिली।
अन्तिम क्रिया उस सिंह की ना पता कैसी क्या हुई ॥

* दोहा *

अब आगे इतिहास का है यह उपसंहार।
महज हंसी की बात है सुनो गौर कर यार ॥

(१०९)

जिस व्रक्ष के नीचे पड़ी आजाद जी की लाश थी।
अति भक्ति से श्री प्राग की जनता उसी के पास थी।
इस बात से भी कुछ नकुछ डर हो गया सरकार को।
कटवा के जड़ से पेड़ आया धीर हावादार को ॥

(११०)

है जिक्र इस पुस्तक में जिस साहसी रणधीर का।
श्री चन्द्रशेषर शेर का अतिशय महा बलवीर का ॥
आजाद करना मुल्क को था ध्येय उसका क्रान्ति थी।
पर सत्य पूछो तो यहीं बस वीरवर की भ्रान्ति थी ॥

(१११)

इसही वजह से फेल था वह इम्तहां में हो गया।
कुछ काम भी ना हो सका औ हाथ जां से धो गया॥
इससे बेहतर था कि करता काम दुसरी राह से।
तो काम भी होता बचा लेता भी जीवन दाह से॥

(११२)

जन संगठत करता मिला लेता जरूर किसान को।
तो फायदा भी पहुँचता कुछ मुल्क हिंदुस्तान को॥
कांग्रेस के मंच पर वह निज नाम कर लेता अमर।
सुख शांति का संदेश देता घूमता जो दर बदर॥

(११३)

तो नाम होता काम होता दुःख भी पाता न वह।
असमय में जग से तोड़ नाता देवपुर जाता न वह॥
पर होगया सो होगया अब छांड़िये उसका ज़िकर।
अब क्या धरा इस बात में आगे की कुछ करिये फिकर॥

(११४)

'यदि आप में से कुछ किसी को हौसला हो काम का।
तो देख लेना हृष्य पहले मित्रवर अंजाम का॥
जो काम करना हो वो करना हाथ पांव बचाय कर।
आज़ाद करवाना वतन को कांग्रेस में आय कर॥
तन आत्मा पायेगी शांती मान्यवर आज़ाद की।
आज़ाद हिंदुस्तान को हो सदा जिंदाबाद की॥

मुद्रक-पं० रामप्रसाद त्रिवेदी प्रभात प्रेस अहाता सवाईसिंह
चौक-कानपुर।

किताबों की बड़ी दूकान

बम्बई पुस्तकालय

चौक कानपुर।

हमारे यहां बम्बई, बनारस, लखनऊ, गीता प्रेस, कलकत्ता, मथुरा, बरेली, हाथरस आदि सब जगहों की पुस्तकों का भरपूर स्टाक काफ़ी तादाद में रहता है।

अतएव पुस्तक विक्रेताओं तथा पुस्तक प्रेमियों से प्रार्थना है कि एक बार पुस्तक खरीद कर परीक्षा करें।

मैनेजर–

स्व०-गङ्गानारायण शुक्ल उर्फ़ (मान बाबू)

मुद्रक–पण्डित रामप्रसाद त्रिवेदी।

'प्रभात' प्रेस, (अहाता सवाईसिंह) चौक–कानपुर।